

HINDI COURSE A

केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, दिल्ली
सेकंडरी स्कूल परीक्षा (कक्षा दसवीं)
परीक्षार्थी प्रवेश-पत्र के अनुसार भरें

प्रिष्ठा Subject : Hindi Course-A
002

परीक्षा का दिन एवं तिथि
Day & Date of the Examination : Saturday 29/02/2020
माध्यम
Medium of answering the paper : Hindi

प्राप्ति कार्ड संख्या	Code Number	Set Number
इच्छा पत्र के अनुसार	3/2/3	① ② ④

आरेका उत्तर-पुरिका (अ) की सभ्या
No. of supplementary answer-book(s) used

Nil

बेचमार्क टिक्काओं आविष्ट

हैं / नहीं
Yes / No

दिक्कलामत का कोड
(अनेक पत्र के अनुसार)
Code of Disabilities
(as given on Admit Card)

Nil

सभ्या लेखन - लिपिक अपलब्जन करताया गया ; हैं / नहीं
Whether writer provided : Yes / No

यदि द्वितीय है तो उपर्योग में लाए गये
सांकेतिक का नाम :
If Visually challenged, name of software used :

Nil

*एक खाने में एक अकार लिखें। नाम के प्रत्येक भाग के बीच एक खाना रिस्त छोड़ दें। यदि परीक्षार्थी का नाम 24 अकार से अधिक है, तो केवल नाम के प्रथम 24 अकार ही लिखें।
Each letter be written in one box and one box be left blank between each part of the name. In case Candidate's Name exceeds 24 letters, write first 24 letters.

प्र० - क०

प्र०. (क) सामाजिक सुरक्षा एवं सामाजिक जीवन की समस्त आनंदपूर्ण गतिविधियों को बनारु रखने में पड़ोस का महत्व है। पड़ोस सामाजिक जीवन के ताने-बाने का संभूर्ण महत्वपूर्ण आधार है।

(ख) पड़ोसी के साथ संबंध रखना हमारे हित में इस तरह है कि किसी भी आपस आकर्षित आपका अथवा आवश्यकता के समय रिश्टेयरों को बुलाने में समय लगता है परंतु पड़ोसियों को बुलाने एवं मध्य लेने में समय नहीं लगता।

(ग) पड़ोसी से निभाने के लिए हमें पड़ोसियों से प्यार करना चाहिए, उनसे सहानुभूति रखनी चाहिए, सुख-दुख का आकान-प्रयान करना चाहिए तथा उसके शोक व आनंद के क्षणों में सहायता होना चाहिए।

(घ) 'विश्वस्त सहायक' से अभिप्राय है कि पड़ोसी एक ऐसे सहायक होते हैं या वनस्कते हैं जिन पर विश्वास किया जा सके।

पड़ोसी को विश्वस्त सहायक इसलिए कहा गया है क्योंकि किसी भी आकर्षित आपका के समय हमार्फ पड़ोसियों पर ही भरोसा कर सकते हैं और उनसे मध्य ले सकते हैं क्योंकि ऐसे समय में किसी अनजान व्यक्ति से मध्य की पुकार करना।

सही नहीं है।

- (3) विश्व-वंचुल की बात लेखक ने इसीलिए कही है क्योंकि जो लोग अपने मड़ौसियों से भाँझपारा ही मधुर गँड़ रखते हैं वह लोग विश्व रखता, सब रास्ते रख भी नहीं रख सकते।

(4) पड़ोस का महत्व

खंड - ख

प्र. 2 (क) दर्शकों ने जादुगर का जादू देखा और थंग रह गए।

(ख) नवाब साहब ने तौतिया झाड़कर सामने लिखा लिया।

(ग) ऐसे ही नवाब साहब ने खीरे का स्वाद लिया वैसी ही उसके आनंद में पलकें मूँद आई।

(घ) संज्ञा आंशिक उपवाक्य

प्र०३ (क) वस की खिड़की से न शौंका जाए।

(ख) धर्मगुरु के दुवारा कामिल बुल्के की बात मान ली गई।

(ग) तुम्हे दुवारा पढ़ा क्यों नहीं जाता?

(घ) वह ३४ - कैठ नहीं सकता।

प्र०५ (क) नया : → गुणवाचक विशेषण —

→ स्कृतचन —

→ पुरीलग

→ विशेष्य 'पान' की विशेषता बताता है —

(ख) यह : → सार्वनामिक विशेषण

→ स्कृतचन

→ विशेष्य 'साइकिल' की विशेषता बताता है

⇒ मुक्ति से

(J) माँ की : → जातिवाचक संक्षो
स्त्रीलिंग —

- संविधान परिवर्तन
- संविधान कार्यक्रम
- संविधान कार्यक्रम

(iv) सया ही : → सीतावपक क्रियावशष्ठी
→ 'सनने' क्रिया की विशेषता बताता है।

प्र० ५ (६) हाल्य रस

(2) एक अपंगा केखो रे माई!

ठाई सिंह चरावे गाय

ਪਹਿਲੇ ਪ੍ਰਤ ਪੀਂਘੇ ਮਾਰ੍ਹ

चेला के गुरु लागे पाई

(II) वीर रस

(३) हास

प्र० ६ (क)

पानवाला हँसमुख स्वभाव व्यक्ति था क्योंकि जब हल्दयर साहब ने उससे मूर्ति पर लगे चश्मे के बारे में पूछा तो वह आँखों की ही आँखों में हँसा, उसका पेर हँला और उसने अपना पान थूककर हल्दयर साहब को जवाब दिया और उसने हल्दयर साहब द्वारा बानवाले के बारे में पूछे गए हर सवाल का ऐसके मतानुक्रम दिया तरीके से जवाब दिया है, परन्तु जब हल्दयर साहब ने मूर्ति पर चश्मा नहीं डोने का आशय जताया तो पानवाले की आँखों में आँसू आए और उसने हल्दयर साहब को कैप्टन की मृत्यु के बारे में कहताया और उसका ही गया इससे प्रतीत होता है कि उसके हृदय में संतोष था।

(ख)

गर्भियों की उमस भरी शाम बालगोंकि भगत द्वारा गए जाने वाले मध्युर गीत एवं उनका उन गीतों पर मुख्य होकर नाचने लगना एवं सभी अन्य लोगों का उस उनका साथ देना एवं उन्हीं की तरह गीतों में लीन हो जाना शाम के शीतल एवं मनमोहक रहा देता था।

(ग)

धा पायर बुल्के की मृत्यु पर लेखक को आहत इसलिए हुई क्योंकि पायर का निधन जहरबाद से हुआ जो कि एक गंभीर विनीमारी है। लेखक का कहना यह था कि जिस व्यक्ति की जगते में अमृत घोड़ता है, जो व्यक्ति इतना विषम, मीठा लोलने वाला

हो, सबको इतना स्नेह करने वाला है उसे जहरनाय जैसी गंभीर बीमारी से नहीं
मरना चाहिए था।

(५) बिस्मिल्ला खाँ ईश्वर से सुर माँगते थे। वह उनकी हमेशा यही युआ रहती थी कि अल्लाह
उन्हें मीठा सुर बख्तों। वह ऐसा इसीलिए माँगते थे क्योंकि उनका मानना था कि
वह अब भी शहनाई उतनी अच्छी नहीं बजाते और वह चाहते थे कि उनका सुर व
शहनाई वापन इतना मीठा हो कि सुनने वालों की आँखों से आँसू आ जाएँ।

इससे यह पता चलता है कि बिस्मिल्ला खाँ एक बहुत ही सीधे व सरल व्यक्ति
थे जो अपनी कला के प्रति पूर्णरूप से समर्पित थे और अपनी कला को बैठतर बनाने
के लिए निरंतर अभ्यास करते थे जब युआ करते थे।

(६) (क) लेखक ने सोकंड क्लास का टिकट इसीलिए खरीया क्योंकि उन्हें भीड़ से बचकर एकांत
में अपनी कहानी के संबंध में कुछ सोचना या और उन्हें ज्याया दूर भी नहीं जाना था।
तथा उन्हें रिक्डीकी से प्राकृतिक दूर्घयों का आंखें भी लेना था।

(ख) लेखक को लगा कि सोकंड क्लास का फिडिल्ला निर्जन होगा और वह अकेले ही सफर
करते हुए जाएंगे परंतु ऐसा नहीं था क्योंकि डिल्ले में पहले से ही एक सफेदपोश
सज्जन बैठा हुआ था।

(7) सज्जन व्यक्ति ने जब लेखक को डिल्के में जाते हुए येखा तो उनकी चेहरे पर आँखों में एकांत पिंतन में बाधा स्वं उनके चेहरे पर असंतोष का भाव फिराई दिया। लेखक ने उनके व्यवहार से यह अनुमान लगाया कि वह भी कहानी के लिए सूक्ष्म की पिंता में हैं या खीरे और सौंदर्य आधा अपयार्थ वस्तु का शौक करते देखे जाने पर उन्हें असंतोष हो रहा है।

प्र. 8 (क)

भोलानाथ अपने पिता के बहुत करीब थे। वह उनके साथ ही सोते थे, खाते थे, नहाते थे, खेलते थे और उनका सारा जिन उनके पिताजी के साथ ही व्यतीत होता था। उनका कहना था कि उनका उनकी माँ से सिर्फ दृश्य तक का ही रिश्ता है। उनकी माँ उन्हें उनके बालों में सरसों का तेल डालती, उबलन करती, स्वं छुचोटी गूँथती थी। इससे उन्हें बहुत कष्ट होता था।

भोलानाथ ने जब सॉप को येखा तो वह बहुत घबरा गए स्वं गीरने के कारण लहूलुहान हो गए और यौड़कर सीधे अपनी माँ के पास चले गए और पिताजी के लाख तुलने पर भी नहीं आस न क्योंकि बभोलानाथ को कष्ट सहने के बाद अपनी माँ की गोद में रांति का अनुभव हुआ और माँ के घार, वातरवातस्त्व, बे खंड करना ने उन्हें अपनी ओर खींच लिया।

(x) इंग्लैंड की महारानी के भारत आगमन पर अखबारों में महारानी के परिवान को लेकर जो समस्या उठी उसके बारे में छापा गया, उनके यहाँ काम करने वालों, खाना बनाने वालों की पूरी जीवनीयों छापी गई, महारानी की उन्मपत्री छापी गई, यहाँ तक कि उनके महल में रहे वाले कुत्तों के बारे में भी बताया गया। ऐसा लग रहा था मानो शख इंग्लैंड में बज रहा है और सुनाई यहाँ दे रहा है। जब महारानी भारत आ रही थी तब भारत में सबसे बड़ी विपण्य यह थी कि जर्ज पंचम की लाट पर नाक नहीं हैं और इस विषय पर भी कई खबरें छपी थीं।

महारानी के आने के फिल सब अखबार शांत इसीलिए थे क्योंकि जर्ज पंचम की लाट पर नाक का जो मस्सला था वह हल हो चुका था और खबर यह थी लाट पर जिंदा नाक लगाई गई है जो बिलकुल असली लगती है। सरकारी अफसरों ने कई प्रयास किए मूर्ति पर नाक लगवाने के यहाँ तक कि भारत देश के मामलान पुरुषों की नाक काटकर लगाने को भी कह दिया। उनका यह रखेया उनकी छोटी मानसिकता एवं इधर सम्मान पाने की भावना दर्शाता है, यह दर्शाता है कि उनकी इच्छा पर देश के महान लोगों के लिए कोई सम्मान नहीं है। और इस रखेये से देश की प्रीतिष्ठा को देश पहुँची थी इसीलिए सभी अखबार शांत थे।

प्र० छ) कवि 'जितना बूही योड़ा तू उतना ही भरमाया' इससे कवि यह कहना चाहते हैं कि मनुष्य जितना अपने अतीत की बातों को याद करेगा। उसे उतना ही दुख होगा। सबं वह जितना सम्मान, धन, आ प्रतिष्ठा पाने के पीछे बमागेगा उतना ही भ्रमित हो जाएगा। सबं अपने आज को नहीं जी पाएगा और दुख को अपनी ओर आकर्षित करेगा।

(क) (ii) परशुराम विश्वामित्र से लक्ष्मण की रिकायत इन शब्दों में करते हैं कुछ इस तरह करते हैं। वह उनसे यह कहते हैं कि विश्वामित्र! मैं इस बालक को ऐसे तुम्हारे घोर्ये के कारण ही छोड़ रहा हूँ, अमर तुम इसे समझा दो नहीं तो यह बालक मेरे हाथों भारा जाएगा। यह बालक बहुत ही कठुवाड़ी, दुष्ट है और मैं चाहता हूँ तो इसे मार देता वस तुम्हारे शील के कारण ही रुका हूँ।

(घ) 'कन्याकुम' कविता में माँ अपनी बेटी को घरे पर न रीझने की, अत्याचार न सहने की, आभूषणों के बंधनों में न बँ बंधने की सीख देती है, और लड़की बनने की परंतु लड़की जैसी न कियाई देने की सीख देती है। और मजबूत बनने को कहती है। खरंम परंपरागत माँ अपनी बेटियों को परिवार की सेवा करने की व उनका हर दृश्य में सम्मान करने की सबं उनके खिलाफ़ न जाने की सलाह देती है तो कि कविता में माँ के दुवारा यी गई सीख से भिन्न है।

(5) संगतकर जब सुरों की भूर्गई में खो जाता है, तरतमक की ऊँचाई में खो जाता है तो उसकी आवाज में हिपक सुनाई देती है।

(3) संगतकर की आवाज में हिपक इसीलए सुनाई देती है क्योंकि वह अपने स्वर को मुख्य गायक स्कॉर स्वर से ऊपर नहीं उठाना चाहता। वह मुख्य गायक को उम्रेशा सम्माले रखता है एवं उसके स्वर को इधर-उधर नहीं जाने देता एवं उसकी लय को बाँधे रखता है और जब मुख्य गायक कही अटक जाता है तो उसकी उम्रेश करता है।

न-10 (6) कवि वायलों से गरजने का आग्रह कर रहे हैं क्योंकि वायलों का गरजना क्रांति लोने के रूप में पिखाया गया है। उनका मानना है कि वायल वदलाव लोने के प्रतीक हैं। वह वायलों से आग्रह कर रहे हैं कि वह सभीके जीवन को नया बना दे एवं उसे खुरायों के से भर दे।

(7) वायलों की तुलना काले पुँछराले वालों से की गई है। कवि वायलों की तुलना वाले वर्यों की कल्पना से भी करते हैं। वायल बड़े और काले हैं इसीलए उनकी तुलना ऊपर की गई चीजों से की गई है।

(8) कवि के अनुसार नूतन कविता वायलों के समान यानि कि क्रांति एवं वदलाव उल्लेखी होनी चाहिए एवं उनका उम्रेश के जीवन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ना चाहिए।

स्वं लोगों के जीवन को नया बना देना चाहिए।

ख5-व्य

प्र. 11.

अतु निवाय

आत्मविश्वास और सफलता

→ प्रस्तावना : आत्मविश्वास और सफलता का स्फूर्ति वह ही पुराना व गहरा रिश्ता है। आत्मविश्वास जहाँ-जहाँ है वहाँ-वहाँ सफलता है। सफलता पाने के कुछ डरहरी विन्दु हैं जैसे मेहनत, त्याग, अनुशासन आदि उपरंतु यह सब कुछ व्यर्थ है अगर किसी भी मनुष्य में आत्मविश्वास नहीं है तो। आत्मविश्वास की कमी मनुष्य को ले डूबती है ऐसे उसे पर्य से भ्रमित कर देती है।

→ आत्मविश्वास से तात्पर्य : आत्मविश्वास यो शब्दों से मिलकर बना है आत्म स्वं विश्वास। आत्म का अर्थ है खुद पर और विश्वास का अर्थ है भरोसा यानि कि स्वयं पर भरोसा। आत्मविश्वास सफलता की पहली सीढ़ी है। मनुष्य को अपनों पर भरोसा करना चाहिए परंतु सबसे ऊपरा भरोसा। उसे शर्तयं पर करना चाहिए। आत्मविश्वास की कमी बहुत लोगों में खलती है,

वयोंकि लोग अपने आप को घोड़कर दूसरों पर भरोसा करते हैं। आत्मविश्वास जन्म से नहीं आता, उसे अपनी अंधेरा पड़ता है और यह सिर्फ़ पूर्ण एवं सही जन्म के हो सकता है।

→ आत्मविश्वास सफलता के लिये क्यों आवश्यक : मान लीजिए कि आपने अपनी परीक्षा के लिये कड़ी मेहनत की है, फर्स्तु आप एक प्रश्न का उत्तर नहीं दे पारे हैं और आप श्रमित हो गए हैं कि कौनसा उत्तर सही है। अगर ऐसी स्थिति में मनुष्य में आत्मविश्वास हो तो वह तो वह कह कीठा से कीठा उत्तर का उत्तर दे सकता है। सोचिए अगर ऐडिसन को अपने ऊपर विश्वास ना होता तो क्या वहाँ का आविष्कार होता? अगर जेम्स वॉट को आत्मविश्वास ना होता तो क्या आज स्थीम डैडन होता? इस इतिहास में जितने भी सफल लोग हैं उन्हें अपने ज्ञान पर, अपनी कला पर, अपने आप पर पूरा विश्वास है तभी वह सफल है। अगर वह लोग अपने आस-पास के लोगों पर भरोसा करते तो आज रायख सफल नहीं होते। आत्मविश्वास के बारे में सारी मेहनत व्यर्थ है और आत्मविश्वास ही सफलता की ओर पहला कदम है।

→ अंडकार और आत्मविश्वास : अंडकार और आत्मविश्वास में उमीन-आसमान का पर्क है। अंडकारी व्यक्ति अपने ज्ञान पर इतना अंडकार करता है कि वह गलत चीज़ को भी सही मानता है एवं दूसरों को नीचा फिखाने के लिये

कुछ भी कर सकता है। परंतु आत्मविश्वासी व्यक्ति ने अपनी गलतियों को स्वीकारता है एवं दूसरों की सुनता है और उनकी मध्य करता है एवं दूसरों के भले के बारे में सोचता है। अट्कारी व्यक्ति को लगता कि पूरी दुनिया में सबसे ज्याक ज्ञानी सिर्फ़ वही है और वह आगे बढ़ने की भी नहीं सोचता और अपने नारा का कारण स्वयं होता है इसके विपरीत आत्मविश्वासी व्यक्ति हमेशा बज्याया से बज्याया ज्ञान प्राप्ति की कोशिश करता है और अधिक सफलता प्राप्त करता है।

→ उपसंहार : आत्मविश्वास एक मनुष्य के ठीकने में बहुत आवश्यक है, उसकी सफलता में उसका सबसे बड़ा लाभ होता है। इसन को इस बात का सबसे ज्याया व्यापर यहाँ चाहिए कि उसका आत्मविश्वास अट्कार ना बन जाए तो स्वयं के लिए व दूसरों के लिए भी ठारिकारक हो। आत्मविश्वास व्यक्ति को अपने अंदर छलना पड़ता है। यह ज्ञान से आवा है। अगर आपको अपने ज्ञान व मतिमा पर भरोसा है तो इस दुनिया में कोई चीज़ नहीं है तो आप खासिल ना कर पाओ। अतः मैं यह कहना चाहूँगी कि आत्मविश्वासी राम और अंतुर भी रावण नहीं।

B6 बिनाराम लिंगम

१०१२.

प्र

वंगला नं. ७ वायरलेस ऑफिस के पीछे

एस. ए. एस. रोड, कम्पू, महाराष्ट्र
गवालियर, म.प्र.

दिनांक : 29/02/2020

सप्तम नमस्ते!

मधुपुर स्मृतियाँ। पितजी मैं यहाँ कुशल हूँ और आशा है कि आप और परिवार भी
 कुशल होंगे। आज मैं आपको एक खुशबूखबरी देना पाहती हूँ। मुझे अंतर्विधालयी
 क्रिकेट प्रतियोगिता के लिए स्कूल टीम का कप्तान चुना गया। यह सब सिर्फ आपकी और
 मेरी मौहनत को कारण हुआ। आपने हर कदम पर मेरा साथ दिया और मेरे क्रिकेट के
 प्रतिलगाव को इतना बड़ा किया कि आज आपनी टीम की कप्तान हूँ। पितजी
 जब मेरा इस पद के लिए नाम लिया गया तो मैं बहुत खुश हुई और सिर्फ आपकी
 चाह आई कि आपकी वडाई से मैं मैंने अपने सप्तम का स्कॉलोया सा हिरमामार
 महत्वपूर्ण हिस्सा पूरा कर लिया। मैं इसके लिए सदैव आपकी 'आभारी' रहूँगी।
 पितजी आज के लिए बस इतना ही। भाई भाई को मेरी प्रापाम
 प्यार देना एवं यादेजी को मेरा प्रापाम कहा और अपना ख्याल करना।

आपकी आङ्गामारी बेटी

१८०५

प्र०१३

विज्ञापन

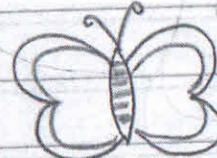
हस्तकला प्रदर्शनी

वार्षिकोत्सव पर
एक विशेष कार्यक्रम



विद्यार्थियों की लगन व
मैल्लत से निर्मित
हस्तकला की वस्तुएँ

विद्यालय में पहली
वार



कुछ नया और
बेहद अलग

- मिताक : 29/02 → तरीख को ध्यान में रखिए (3/03/2020)
- अद्यभुत चीजें देखनी हैं जो आएं विद्यालय के सभा हॉल
- समय : • मुबाद 9:00 से 11:00
- देखिए वो भी तिलकों सुपर्फाइ